भूमिका

भारत का पड़ोसी देश होने के नाते नेपाल में भी भारत से चली खुलेपन की ताज़ी हवा बराबर पहुँचती रही है और उसके साहित्य पर या उपन्यास पर भी समय-समय पर विभिन्न वादों और साहित्यिक आंदोलनों का प्रभाव रहा है। नेपाली साहित्य सैकड़ों वर्षों तक मौखिक और लोकगीत के रूप में ही अस्तित्व में रहा। यद्यपि भानुभक्त आचार्य से पहले कोई प्रकाशन लिखित रूप में उपलब्ध नहीं है। इसलिए इन्हें नेपाल का आदिकवि भी कहा जाता है। नेपाली भाषा में रामायण की रचना भानुभक्त का एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस काल में साहित्य प्रमुख रूप से नेपाली भाषा में ही प्रकाशित होने लगा था। इस शोध को लिखने का मुख्य उद्देश्य स्त्री का उसकी अपनी पहचान व अस्तित्व के लिए किए गए संघर्ष को दर्शाना है। दोनों उपन्यासों के माध्यम से स्त्री की गुम होता अस्तित्व तथा उनके संघर्ष भरे जीवन को समाज के सामने रखा गया है। यह सिर्फ दोनों उपन्यासों की पात्र मृणाल और मोतीमाया की कहानी नहीं है बल्कि हर देश की महिलाओं की कहानी है। चाहे वह नेपाल हो या भारत दोनों देशों की सामाजिक संरचना लगभग एक समान है।

एक सुचिंतित भारतीय विचारक होने के कारण आज के बहुत सारे प्रश्नों का उत्तर जैनेन्द्र के यहां मौजूद है। उनकी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक बहस के केंद्र में चूँकि नारी होती है, इसलिए अधिकतर बहस स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसकी स्वतंत्रता, उसके स्वतत्व तथा उसके बुनियादी अधिकारों पर केन्द्रित नैतिक प्रश्नों से जूझती है तथा आधुनिक जीवन-बोध के तहत नारी के व्यक्तित्व निर्माण की प्रस्तावना भी करती है। मनोविश्लेषण शास्त्र का गहरा प्रभाव जैनेन्द्र के उपन्यासों पर देखने को मिलता है। उनके उपन्यासों का समस्त नारी चित्रण मानसिक घात-प्रतिघात से परिचालित सा लगता है। किसी भी नारी चरित्र को लें तो उनका मन मानसिक द्वंद्व से प्रभावित है। नेपाली समाज की नारी भी हर तरफ से पुरुष के द्वारा शोषित तथा पीड़ित है, चाहे वह गरीब हो या अशिक्षित वर्ग की हो और सभ्रांत या शिक्षित वर्ग की, फिर भी उन्हें जहाँ-तहाँ प्रताड़ित होना पड़ता है। शारीरिक रूप से हो या मानसिक रूप से, उनका शोषण किया जाता आ रहा है। हृदयचन्द्र सिंह प्रधान ने उपन्यास के क्षेत्र में जीवन की गहन समस्याओं की स्थापना की और उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'स्वास्नीमान्छे' में आधुनिक उपन्यास के सभी लक्षण पाए जाते हैं। साहित्यकार हृदयसिंह प्रधान द्वारा लिखा गया उपन्यास 'स्वास्नीमान्छे' में नारी समस्या का चित्रण तथा ततसंबंधीमुक्ति के सन्देश का पक्ष लेते हुए नजर आते हैं। हृदयचन्द्र सिंह प्रधान के उपन्यास में नारी-मुक्ति की चेतना झलकती है। इस उपन्यास के विषय का श्रोत नेपाली समाज है। स्वास्नीमान्छे में नेपाली

समाज के पुरुष द्वारा घृणित व्यवहार का चित्रण हुआ है। अतः लेखक उसी व्यवहार के विरुद्ध सशक्त प्रतिकार का सन्देश प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र मोतीमाया का किस प्रकार शोषण होता है इसका मार्मिक चित्रण उपन्यासकार ने किया है।

प्रस्तुत लघु शोधप्रबंध तुलनात्मकता की दृष्टि से दोनों रचनाकारों के नारी पात्रों की समस्याओं, संघर्षो, और द्वंद्व को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण है। यह लघु शोध-प्रबंध चार अध्ययन में विभाजित है प्रथम अध्याय के अंतर्गत दोनों उपन्यासकारों जैनेन्द्र कुमार और हृदयसिंह सिंह प्रधान के व्यक्तित्व और कृतित्व को दिया गया है। जिसमें उपन्यासकारों के जन्म, शिक्षा तथा जीवन के बारे में संक्षिप्त में परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में जैनेन्द्र और हृदयचंद्र का नारी के प्रति कैसा दृष्टिकोण रहा है इसका उल्लेख किया गया है। जैनेन्द्र की स्त्रियाँ, संबंधों की मर्यादा में रहते हुए भी स्वतंत्र व्यक्तित्वबनाए रखना चाहती हैं। तो हृदयचंद्र की स्त्रियों को समाज के हित के मर्यादा तोड़नी पड़े तो भी वह पीछे नहीं हटती।

तृतीय अध्याय में जैनेन्द्र कृत हिंदी उपन्यास त्यागपत्र और हृदयचंद्र कृत नेपाली उपन्यास स्वास्नीमान्छे में नारी पात्रों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। वह समाज जहां पुरुषों का वर्चस्व है और जिसके मूल्य पुरुष वर्चस्व पर आधारित हैं। इसके खिलाफ जाना परंपरा को तोड़ना है। अपनी महान संस्कृति की सीमाएं लांघना है। मृणाल और मोतीमाया भी इसी परम्परा नामक चक्रव्यूह में फँसती हैं।

चतुर्थ अध्याय में दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन के लिए दो उपन्यासों का चयन किया गया है। जिनमें से एक हिंदी उपन्यास जैनेन्द्र कुमार कृत 'त्यागपत्र' है और दूसरा नेपाली उपन्यास हृदयसिंह सिंह प्रधान कृत 'स्वास्नीमान्छे' है। उक्त दोनों उपन्यास नारीप्रधान है दोनों में पुरुष वर्चस्व और नारीत्व के हनन का चित्रण है। दोनों में एक बात स्पष्ट है कि देशकाल और समाजिक परिवेश कोई भी हो सबमें पूर्ण रूप में समानता पायी जाती है। नारी चाहे जिस वर्ग की हो, वह शोषण से मुक्त नहीं हो सकती है, हर देश में स्त्री की वही स्थिति देखी जाती है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में उपरोक्त चारों अध्यायों के पश्चात् उपसंहार और परिशिष्ट के अंतर्गत सन्दर्भ सूची दिया गया है। इसमें दोनों उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन से निष्कर्ष क्या निकलता है, के बारे में चर्चा की गई है।

उपन्यासों में रुचि होने के कारण मैंने अपने लघु शोध प्रबंध के लिए दो उपन्यासों का चयन किया। दो भिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन हेतु मेरे लघु शोध-प्रबंध के दौरान जैनेन्द्र से संबंधित सामग्री

संकलन हेतु कोई विशेष समस्या नहीं रही, लेकिन हृदयचन्द्र से संबंधित सामग्री के संकलन में थोड़ी बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए नेपाली साहित्य के जिन पुस्तकों को आधार ग्रंथों तथा सन्दर्भ ग्रंथों के रूप में प्रयोग किया गया है। वे सभी मूल रूप से नेपाली भाषा में लिखी गई पुस्तकें हैं। नेपाली और हिंदी भाषा की लिपि एक ही है लेकिन उनके बोलने का ढंग और लिखने की शैली और भाव व्यक्त करने का अंदाज अलग-अलग है। इसलिए इन बिंदुओं के प्रति ध्यान आकर्षण करना जरूरी है कि प्रस्तुत शोध में दिए गए नाम, शब्द और सन् के स्थान में विक्रम संवत् का प्रयोग किया गया है और कहीं-कहीं बोली गई भाषाएँ भी शुद्ध नहीं जान पड़ती हैं। इसलिए प्रस्तुत लघु शोध की भूमिका में इन बातों को स्पष्ट करना आवश्यक था जिससे कि आगे कोई भ्रम न पैदा हो। इसके साथ ही मैंने शोध का उद्देश्य, शोध का महत्त्व, शोध का क्षेत्र, शोध प्राविधि और साहित्य का पुनरावलोकन किया है जो निम्नवत है-

➢ शोध का उद्देश्य

भारत हो या नेपाल आज भी अधिकांश स्त्रियां ऐसी है जो मुक्ति का अर्थ नहीं समझ पाती। यहां तक कि उन्हें अपनी अस्मिता का भी बोध भी नहीं है। समाज भी इनके जीवन के तमाम क्षेत्रों में संघर्ष करने व जीवन से रूबरू होने का अवसर नहीं देता। ऐसी स्थिति में स्त्री-मुक्ति की मुहिम के लिए सबसे बड़ी चुनौती है स्त्रियों में मुक्ति की इच्छा जगाना।

➢ शोध का महत्व

आज भी समाज का एक बड़ा तबका ख़ासकर स्त्रियां कहीं न कहीं विकास चक्र के दायरे से छूट रही हैं। हम अपने सफलता का मूल्यांकन तभी कर पाएंगे जब सभी स्त्रियों को समाज में समान अधिकार प्राप्त होगा और यदि मौजूदा पूर्वाग्रह पर विजय पाना है, तो स्त्रियों की अधिकारों का रक्षा करना होगा। आज भी कहीं न कहीं पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की स्थिति चिंतनीय है। अगर हम बेहतर परिणाम की प्राप्ति चाहते है तो समाज के सभी वर्गों की ओर से स्त्रियों की सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को दूर करना होगा।

➢ शोध का क्षेत्र

समाज में स्त्री विकास सदैव ही एक चुनौती के रूप में विधमान रहा है। भारत में भूमंडलीकरण के शुरुआत के बाद भी साहित्य के क्षेत्र में स्त्रियों की अस्मिताओं को लेकर चिंतन और लेखन बहुत होते रहे हैं, फिर भी कहीं न कहीं आज भी स्त्री समाज हाशिए पर देखा जा रहा है। जिसके कारण मैंने अपने इस

शोध में स्त्रियों की अस्मिता को हिन्दी उपन्यास 'त्यागपत्र' और नेपाली उपन्यास 'स्वास्नीमान्छे' की तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा स्त्रियों के संघर्षों और चुनौतियों को उजागर करने का प्रयास किया हैं। ताकि उनके विकास के प्रयास और उनकी जीवन शैली तथा उनके सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सके। उपन्यास 'त्यागपत्र' और 'स्वास्नीमान्छे' में स्त्री अस्मिता के संकट को गहरी प्रमाणिकता व संवेदनशीलता से उठाया गया है। इसी को संज्ञान में रखकर मैंने इस विषय में शोध करने की जरूरत महसूस की।

➢ शोध प्राविधि:

शोध से संबन्धित द्वितीय स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का एतिहासिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए अपने लघु शोध-प्रबंध की निष्कर्ष को प्राप्त करने का प्रयास किया है। इस शोध में अंतरअनुशासनिक अध्ययन और समाजशास्त्रीय अध्ययन की सहायता लेते हुए स्त्री की संघर्ष तथा समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध में स्त्रियों की सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन, स्त्री साहित्य में प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। प्राप्त तथ्यों का निरिक्षण, संग्रह एवं विश्लेषण कर तार्किकता के आधार पर स्त्री समाज पर प्रभाव में हिंदी तथा नेपाली उपन्यास के दोनों पहलओं की अंतर्वस्तु विश्लेषण करके स्त्री समाज की वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

➢ साहित्य का पुनरावलोकन

1. आधार ग्रन्थ

- कुमार, जैनेन्द्र. (1937) त्यागपत्र. पूर्वोदय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली. ISBN: 978-81-263-4053-8.

'त्यागपत्र' में भारतीय समाज की अमानवीय व्यवस्था में कसमसाती और छटपटाती हुई नारी की यंत्रणा का उल्लेख मिलता है। त्यागपत्र की मृणाल का विराट् नारी चरित्र है जो हिंदी उपन्यासों की परंपरा आधुनिक भारतीय नारी का पहला क्रांतिकारी प्रवेश हैं, जहाँ हमारे समाजिक ढाँचे पर जबर्दस्त प्रहार दिखता है और घिसे-पिटे मूल्यों का आक्रामक तिरस्कार। यही कारण है कि 'त्यागपत्र' रूढ़ सामाजिक व्यवस्था के विरोध का उपन्यास बन गया है। अपनी समग्रता में यह उपन्यास एक औरत की दैन्यकथा के बहाने हिंदू समाज -व्यवस्था की मान्यताओं के विरुद्ध खुली अदालत बन गया है जहां हर व्यक्ति अपने को कटघरे में खड़ा पाता है।

- प्रधान, हृदयचन्द्र सिंह.(वि.सं.2066). स्वास्नीमान्छे. साझा प्रकाशन, ललितपुर (काठमांडू).

नेपाली उपन्यास की परंपरा में यह उपन्यास 'स्वास्नीमान्छे' स्त्रियों को अपने अधिकार तथा अपने ऊपर होने वाली अत्याचार के विरुद्ध न सिर्फ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करता है बल्कि अपने हित के लिए हथियार समेत उठाने के लिए अभिप्रेरित करता है। स्वास्नीमान्छे उच्च और निम्न वर्ग का द्वंद्व या संघर्ष न होकर पुरुष और नारी का संघर्ष है जिसमें इनके संघर्षो को मुख्य समस्या बनाकर प्रकट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ इनके संबंधको गहराई से जानकर फिर विद्रोह में से समाधान ढूढ़ने का प्रयास किया गया है। अतः यह कहा गया है कि मूल संघर्ष स्त्री और पुरुष के बीच नहीं है बल्कि शोषक और शोषित के बीच है।

2. सहायक ग्रन्थ

- होटकर, डॉक्टर शैलजा तुलजाराम.(2009).हिंदी उपन्यासों में नारी का चित्रण. नवभारत प्रकाशन, नई दिल्ली.

नारी सर्वगुण संपन्न है क्यों कि नारी से समाज को प्रेम, सृष्टि और शक्ति मिली है। हिंदी उपन्यास साहित्य आरम्भ से ही नारी के प्रति एक प्रकार का विशेष दृष्टिकोण लेकर चला आ रहा है। इस विषय पर आवाज उठाने के लिए यह पुस्तक 'हिंदी उपन्यासों में नारी का चित्रण' सहायक सिद्ध होता है। लेखिका ने बिना किसी हिचकिचाहट के नारी की हर समस्याओं को अपनी इस कृति में उजागर करने का प्रयास किया है। वैश्या समस्या, विधवा समस्या तथा यौवन अवस्था की समस्या जैसे समस्याओं को लेकर बड़े ही मार्मिकता से लिखा है। चूँकि सारी समस्याएं स्त्रियों की जीवन से जुड़ी हुई है इसलिए यह पुस्तक मेरे शोध हेतु उपयोगी सिद्ध होगा।

- जैन, रमेश.(1970).जैनेन्द्र और शरत की नारियां. सप्तसिंधु मासिक पत्रिका, हरियाणा.

लेखक के अनुसार दोनों ही उपन्यासकारों ने अपने नारी पात्रों को पुरुषपात्रों या नायकों के समक्ष सबल दिखाया है। जैनेन्द्र की नायिकाएं सरत की नायिकाओं से आगे कदम रखती है। वे पति की आज्ञाकारिणी होकर प्रेमी के प्रति समर्पित होती है। उनमें सामाजिक एवं नैतिक मर्यादाओं की अवहेलना की अपूर्व प्रवृत्ति है। सुनीता आदर्शवादी का अनुसरण करती है तथा त्यागपत्र की मृणाल सती धर्म की पालन की बात करते हुए शरीर सौंपने में संकोच नहीं करती। शरत की नायिकाएं शांत समाज-प्रताड़ित,

बौधिक एवं चिंतनशील, असीमित प्रणयांकाक्षा एवं उद्दाम लालसा से लिप्त है। जैनेन्द्र की नायिकाएं लोकोपवाद से नहीं डरती है, न गृह प्राचीरों से बंदी रहती है इसके विपरीत शरत की नायिकाएँ असाधारण बौद्धिक, नारीमन, मानसिक उत्पीड़न तथा संस्कारों के बंधन सहन करने के लिए बाध्य है। जैनेन्द्र और शरत नारी की प्रेमभावना को समान रूप से महत्त्व देते है। यही कारण है कि उनकी नायिकाएँ प्रेम-विवाह, बुद्धि-हृदय के द्वंद्व में बनी रहती है। वैश्या समाज-विकृति नारीमूलक समस्या है। जैनेन्द्र और शरत ने वैश्या और विधवा के जीवन के विविध रूपों का उल्लेख किया है।

- लता,सुमन.(1988).जैनेन्द्र तथा इलाचंद जोशी के नारी पात्र: मनोविश्लेणपरक तुलना. पंजाब विश्वविद्यालय,चंडीगढ़.

प्रस्तुत शोध-प्रबंध तुलनात्मकता की दृष्टि से दोनों रचनाकारों के नारी पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति, उसकी समस्याओं एवं नारी, पुरुष द्वंद्वो को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण है। यह शोध प्रबंध आठ अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में जैनेन्द्र तथा इलाचंद जोशी का जीवन परिचय है। द्वितीय अध्याय में मनोविज्ञान की परिभाषा एवं उसकी शाखाओं का विवेचन है। तृतीय अध्याय मंश कला एवं साहित्य के सन्दर्भ में मनोविज्ञान के महत्व का वर्णन किया है। चतुर्थ अध्याय में जैनेन्द्र कुमार तथा इलाचंद जोशी के नारी पात्रों की तुलना फ्रायडीयन दृष्टिकोण से किया गया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि जैनेन्द्र के नारी पात्रों में फ्रायडीयन दृष्टिकोण अतः संघर्ष, काम्जन्य कुंठा, काम-विकृति, आत्मा-पीड़ा, हीन भावना इत्यादि का समावेश है। जबकि इलाचंद जोशी ने फ्रायड की यौन-भावना तथा अचेतन मन के सिद्धांत के आधार पर नारी पात्रों का सृजन किया है तथापि वे एल्डर तथा युग के सिद्धांत से अधिक प्रभावित है। जोशी के नारी पात्रों पर मार्क्सवाद का भी असर है। जैनेन्द्र के सुनीता, त्यागपत्र आदि उपन्यासों का केंद्र में फ्रायड के सिद्धांत के विश्लेषण है तो जोशी के मुक्तिपथ में एल्डर तथा युग के सिद्धांतो का। पंचम अध्याय में दोनों रचनाकारों के नारी पात्रों की समस्याओं के बीच तुलना की गई है। दोनों रचनाकरों के नारी पात्रों के जीवन में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएं उत्पन्न होती है। दोनों पारस्परिक मानसिक तनाव को उत्पन्न करते और झेलते हैं। षष्ठ अध्याय में मनोविश्लेषण की प्रवित्तियों को आधार बनाकर नारी पात्रों का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में मनोविश्लेषणवादी दृष्टिकोणों को तुलना का आधार बनाया गया है। अष्टम अध्याय में उपसंहार और सहायक ग्रन्थ-सूचि है।

- सिंह,श्री लल्लन.(1989).जैनेन्द्र कुमार और अनीता देसाई के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय .

यह शोध-प्रबंध छः अध्यायों में वर्गीकृत है। प्रथम अध्याय में शोधकर्ता हिंदी उपन्यास का इतिहास प्रस्तुत करते हुए उसके मनोवैज्ञानिक मोड़ को इंगित करता है। दूसरे अध्याय में युगीन चेतना के अनुरूप जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों की कथावस्तु और शिल्प में निरंतर बदलाव का रेखांकन तथा कथा और पात्रों से उनकी सम्पृक्ति का अनपेक्षित विस्तृत विवेचन किया गया है। यह अध्याय वर्णनात्मक है। तीसरे अध्याय में अनीता देसाई के उपन्यासों की संक्षिप्त व्याख्या और उनकी मनोवैज्ञानिक चेतना, पात्र, परिवार, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक अवधारणाओं का विश्लेषण किया गया है। यह अध्याय भी विवरणात्मक है। चौथे अध्याय में वस्तु-परिकल्पना की दृष्टि से दोनों उपन्यासकारों का विवेचन और उनकी तुलना की गई है। पांचवे अध्याय में शिल्प की संक्षिप्त परिभाषा देकर उपन्यास में उसका महत्व रेखांकित करते हुए जैनेन्द्र कुमार और अनीता देसाई के उपन्यास का शिल्प अलग-अलग वर्णन-विवेचन किया है।

इस लघु शोध-प्रबंध का आधार उपन्यास है और शोधकर्ता ने उपन्यास के इतिहास का विवेचन करते हुए मनोवैज्ञानिक चेतना, पात्र, परिवार, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक अवधारणाओं का विश्लेषण किया है। चूँकि मेरे शोध का विषय भी उपन्यासों पर आधारित है इसलिए इस शोध प्रबंध में दिए गए सन्दर्भ सूचि में से कुछ पुस्तकमेरे इस शोध-कार्य में सहायक हो सकती है।

किसी भी नवीन कार्य को करने के लिए हमें सहयोग तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। जिसके सहारे हम अपने कार्य को मूर्त रूप देने में सफल हो पाते हैं। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) में हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग में एम.फिल. करने का मौका मिला, जिसमें मैंने "त्यागपत्र और स्वास्नीमान्छे में स्त्री" विषय में लघु शोध प्रबंध कार्य पूर्ण किया। इस कार्य को पूर्ण करवाने में बहुत से लोगों का सहयोग मिलाहै। यहाँ मैं उन सभी लोंगो का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ।

सर्वप्रथम मै अपने शोध निर्देशक सहायक प्रोफेसर डॉ.रामानुज अस्थाना की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर मेरी कठिनाइयों का निराकरण कर मेरा मार्गदर्शन करते रहें। इसके बाद मैं अपने विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सूरज पालीवाल, अधिष्ठाता कृष्ण कुमार सिंह और विभाग के सभी गुरुजनों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस लघु शोध प्रबंध कार्य को सफल बनाने में पूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान किया एवं

मुझे नई-नई जानकारियों से अवगत कराया। यदि मैं अपने इस लघु शोध प्रबंध के बारे में बात करूं तो इस लघु शोध प्रबंध को एक निश्चित अवधि में पूर्ण करना मेरे लिए कदाचित संभव न होता यदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कुछ लोगों का सहयोग न मिलता, इनके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना तो संभव नहीं है। अंततः यदि मैं अपने परिवार जो कि मेरे प्रमुख प्रेरना स्रोत भी हैं, के बिना शर्त के सहयोग का जिक्र यहाँ न करूँ तो यह आभार प्रस्तुति अधूरी ही रहेगी।

मैं अपनी माता जी और बड़ी बहनों का सर्वाधिक आभारी हूँ जिन्होंने समाज में प्रचलित सभी नकारात्मक बातों को नजर अंदाज करते हुए मुझे उच्च शिक्षा हेतु इस विश्वविद्यालय में शिक्षण ग्रहण करने का मौका दिया। साथ ही साथ मैं डॉ. ज्योतिष जोशी, हुस्न तबस्सुम और पवन लुंगेली (नेपाल) का तहे दिल से धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझे पुस्तकें उपलब्ध करवाने में मदद की।

उन सभी को मैं सहृदय से आभार व्यक्त करते हुए इन मित्रों को भी धन्यवाद देना चाहूंगी। जिनके सहयोग के बिना शायद मेरा लघु शोध प्रबंध कार्य अपूर्ण रहता। जिनमें पूजा बंजारे,नीतू थापा, वैशाली पेंदाम, सविता कोल्हे और साथ ही उन सभी मित्रों का भी धन्यवाद जिनका नाम यहाँ देना संभव नहीं हो पाया।

प्रस्तुतकर्ता
सुनीता गुरुंग